

廣
羅
詞

序 獨破綻 冻死不足

杜甫詩集卷之六

责任编辑：冯书华

封面设计：刘云泉

广 释 词

徐仁甫编著 冉友侨校订

四川人民出版社出版 (成都盐道街三号)

四川省新华书店发行 四川新华印刷厂印刷

开本 850×1168 毫米 1/32 印张 20 字数 404 千

1981年5月第一版 1981年5月第一次印刷

印数：1—20,000 册

书号：9118·8

定价：2.33 元

广 释 词 叙

我系退休老师徐仁甫先生成《广释词》一编，盖欲补《助字辨略》、《经传释词》、《经传释词补》、《经词衍释》、《词诠》、《古书虚字集释》、《诗词曲语辞汇释》等七书之不足，而于义例复有所增广者。其广之之类凡四：一曰广词；二曰广义；三曰广例；四曰广时。其广之之法亦四：据互文以求同义；据对文以求反义；据异文以求近义；据同文以求异义。其文具在，兹不详论。

徐先生从事语文教学数十载，用力极勤，蓄积甚富，论述亦夥。此编之成，非率尔而为之，固已屡易其稿，耗多年之心力矣。去秋曾刻印征求意见，再经修改，今始付刊。

因忆顾亭林论著书之难曰：“其必古人之所未及就，后世之所不可无，而后为之，庶乎其传也与！”读故书首在识字，识字贵在解词，实词易诂，虚词难通。加以年世渺邈，载籍烟海，讹字异文，令人目眩。此编遵前修释词之轨辙，予后学汲古之阶梯，虽建例微繁，意在兼该；且诗多文少，或难尽适；然如采铜于山，惟读者之善择焉尔。

徐先生年近八旬，仍口不绝吟，手不停披，期于文化事业有所贡献，其志多可感者。拜读之余，乐贅数语于编首。

四川师范学院中文系冉友侨谨识

一九七九年八月十六日

44c56/02

广释词自叙

时有古今，地有南北，人之语义，不能一成而不变，往往随时地人以蕃衍之。虽在作者，亦不自知其然，端赖学人加以总结。请人总结虚词者，有刘武仲《助字辨略》，王伯申《经传释词》，孙济侯《经传释词补》，吴华石《经词衍释》；民国时代又有杨遇夫《词诠》，裴会川《古书虚字集释》，张献之《诗词曲语辞汇释》。

余在古代汉语教学中，对于汉民族语言发展规律，粗有所识；对于虚词之运用，更觉前人之书尚多阙佚；因编《广释词》十卷，以补前人之遗漏。其诸凡例，可得而言。

一曰广词：如“予”作“之”“而”用，“易”作“可”“已”用，“义”作“自”“虽”用，“恐”作“将”“如”“可”用，“已”作“之”“子”用，“资”作“以”“由”用，“写”作“如”“竭”用，“学”“知”作“如”用等，不但上列七书未收，字书亦失其诂。今著于编，以晓学者。

二曰广义：如“与”有“又”义，“以”有“愈”义，又有“犹”义；“以”“犹”皆有“虽”义，“以”“以为”皆有“曰”义，“曰”有“号（泣）”义，又有“者”义；“惟”有“皆”义，又有“在”“之”义；“何”有“可”义，又有“甚”义；“皆”有“能”义，又有“已”义；“盖”有“虽”义，又有“害”义；“乃”有“反”义，“能”有“若”义，“而”有“既”义，

“此”有“於”义，又有“如此”义；“且”有“此”义，“遂”有“自”义，又有“并”义；“彼”有“於”义，“复”有“将”义等，诸释词书，虽收此词，但无此义，字书亦失其诂，兹著于编，以广其用。

三曰广例：如“岂”作“非”用，训见《助字辨略》，但刘氏所举例句不合，兹另举证。“於是”作“当是时”用，训见《经传释词》，但王氏所举之例无旁证，兹另举其例之有旁证者。“许”作“多”用，训见《经词衍释》，但吴氏所举之例，仅两见于《后汉书》，兹则举汉至唐之诗以广之。“若”作“於”用，训见《古书虚字集释》，但裴氏所举之例既少，又无旁证，无以见其必然；今举异文、互文以广之，则有以见其必然矣。“问”作“向”用，训见《诗词曲语辞汇释》，但张氏所举例，有他本“问”一作“向”者，又有“问”与“对”互文者，独缺“问”“向”互文之例；兹不但举“问”“向”互文，且有“问”“看”互文者，“看”即“向”也。以上见广例之有必要。又“日”作“往日”用，训见《词诠》，但杨氏只举《国语·晋语》二例；兹除举《左传》及六朝乐府为例外，《礼记·檀弓》“日寡人尝学断斯狱矣”，旧本《礼记》，“日”误为“曰”，王伯申《经传释词》，俞荫甫《古书疑义举例》，皆以“日”为一人之词重加“日”字说之；不知“日”为“日”之误，“日”训“往日”也。兹亦附广例之中。笔者对于群书多所辨正，关于其他虚词，有所发正，亦偶附焉。此类于目录则低一字排列，表示其为旧有义，于书内当条必言训见某书，既不掠前人之美，又可见有补证之必要。

四曰广时：总结经传者，不及汉后；总结诗词者，又略

唐前；而八代人对于虚词如何运用，遂成空白。本编举例，上起商周，下迄唐宋，元明清代，亦间及之。而特详八代者，以其运用词语，颇多剩义。如《诗·郑风》有《大叔于田》，旧读“大”为“太”，误将“太叔”连为一词。不知六朝乐府，有《大子夜歌》，其内容为赞美《子夜歌》；则《大叔于田》，亦是赞美《叔于田》。“大”当训“美”，“美”字固从大也。《楚辞·九歌》“若有人兮山之阿，”旧训“若”为“似”“如”“仿佛”，不知《宋书·乐志》载《楚辞钞》：“若”作“今”，“若有人”即“今有人”。则《书·尧典》第一句“曰若稽古帝尧”，谓今稽古帝尧。由此可知，《尧典》乃后人补述，无疑。又《诗》有“愿言”一语，自来解人人异。今读潘岳《在怀县作》“眷然顾巩洛”与“愿言旋故乡”互文，则“愿言”即“眷然”。以之解《诗》三百篇，无不怡然理顺！此用六朝人词语，以解决从前存在问题者。

杜甫诗多用“何处”一语，有当训为“那得”者，“人今何处船？”谓人今那得船？“蓟门何处尽尧封？”谓蓟门那得尽尧封？但无根据。及读庾信《乌夜啼》“御史府中何处宿？洛阳城头那得栖？”两句互文，然后知“何处”即“那得”，六朝人已用之矣。“大家东征逐子回”，杨升庵谓“逐”字无来处，而改作“将”。不知六朝人诗，“随”“逐”互文者多：梁费昶《和萧记室春旦有所思》“水逐桃花去，春随杨柳归。”“逐”犹“随”也。又《巫山高》“愿解千金佩，请逐大王归。”大王可逐，子岂不可逐乎？此杜诗“逐”字来处，何改字为？通过《广释词》编写，如“义”有“自”训，“如”有“又”训等，皆见于六朝人诗中之互文。然后知唐宋人很多虚词运用，大

抵本于六朝。

本书分卷，照《经传释词》。即一至四卷为喉音，五卷为牙音，六七卷为舌音，八九卷为齿音，十卷为唇音。

至于所用基本法则，不外据互文以求同义，据对文以求反义，据异文以求近义，据同文以求异义。皆比物丑类，推知其然。或举一以反三，或推十而合一；无徵不信，有伦有脊。惟前人每有千虑得失之教，况兹编不尽千虑耶！谬误在所难免，海内学者，匡其不逮！

公元一九七二年四月大竹徐仁甫初稿
整理越六年，时年七十又七

目 次

| | |
|-----------|---|
| 冉 叙 | 1 |
| 自 叙 | 2 |

卷 一

| | | | |
|--------------|---|------------|----|
| 与——复..... | 1 | 以为——曰..... | 9 |
| 与——又..... | 1 | 以——谓..... | 10 |
| 与——随..... | 2 | 以——因..... | 10 |
| 与——而..... | 3 | 以——由..... | 11 |
| 与——使..... | 3 | 以——如..... | 11 |
| 与——语..... | 3 | 以——而..... | 12 |
| 与——预..... | 4 | 以——且..... | 12 |
| 与——谓..... | 4 | 以——是..... | 13 |
| 与——如..... | 5 | 以——为..... | 13 |
| 与——于..... | 5 | 以——随..... | 14 |
| 以——用..... | 5 | 以——似..... | 14 |
| 以——益..... | 6 | 以——自..... | 14 |
| 以——犹(尚)..... | 7 | 以——何..... | 15 |
| 以——虽..... | 7 | 以——在..... | 15 |
| 以——曰..... | 8 | 以——所..... | 15 |

| | | | |
|-----------|----|------------|----|
| 以——所以 | 16 | 攸——所 | 25 |
| 以——亦 | 16 | 攸——是 | 25 |
| 以——有 | 16 | 优游——优柔 | 25 |
| 以——与 | 16 | 因——随、逐 | |
| 以——此 | 17 | (附：因声——寄语) | 25 |
| 已——易 | 17 | 用——以、因 | 26 |
| 已——又 | 18 | 允——以 | 27 |
| 已——忽 | 18 | 允——语助 | 27 |
| 已——亦 | 18 | 於——从 | 27 |
| 已——曾 | 19 | 於——居 | 27 |
| 已——则 | 19 | 於——之 | 27 |
| 犹——尚 | 19 | 於——为 | 28 |
| 犹——若(如、似) | 20 | 於——如 | 28 |
| 犹——独 | 20 | 於——胜 | 29 |
| 犹——同 | 21 | 於——于 | 30 |
| 犹——由 | 21 | 於是——遂 | 30 |
| 犹——虽 | 21 | 於是——乃 | 31 |
| 犹——有 | 22 | 於是——故 | 31 |
| 犹——始 | 22 | 於是——然后 | 31 |
| 犹言——仿佛 | 23 | 於是——当是时 | 31 |
| 由——以 | 23 | 予——而 | 32 |
| 由——犹 | 23 | 予——之 | 32 |
| 由——得 | 24 | 余——已 | 33 |
| 由——生 | 24 | 余——其 | 33 |
| 由来——宿昔 | 24 | 于——在 | 33 |

| | | | |
|--------|----|--------|----|
| 于——呼 | 34 | 欲——将 | 39 |
| 于——以 | 34 | 欲——可 | 40 |
| 于——乎 | 34 | 欲——初 | 41 |
| 于——吁 | 34 | 欲——且 | 41 |
| 于——取 | 35 | 宛——依 | 41 |
| 枉——蒙 | 35 | 横——枉、暴 | 42 |
| 枉——空、虚 | 35 | 应——合、当 | 42 |
| 阿谁——何谁 | 36 | 应——定 | 42 |
| 乌——岂 | 36 | 应——因随 | 44 |
| 乌——何 | 36 | 缘——因随 | 44 |
| 乌——孰 | 36 | 易——可 | 45 |
| 象——疑 | 36 | 易——异 | 45 |
| 喻——譬 | 37 | 易——已 | 45 |
| 逾——过 | 37 | 容——尚 | 46 |
| 委——随 | 37 | 容与——流畅 | 46 |
| 厌——多 | 37 | 要自——总是 | 46 |
| 欲——若 | 38 | 懊恼——恨 | 46 |

卷 二

| | | | |
|------|----|----------|----|
| 爱——与 | 47 | 爱——式 | 48 |
| 爱——以 | 47 | 爱——惟 | 48 |
| 爱——是 | 47 | 爱——於是、于时 | 48 |
| 爱——斯 | 47 | 粤——乃 | 49 |
| 爱——有 | 48 | 越——故 | 49 |
| 爱——载 | 48 | 越——愈、益 | 49 |

| | | | |
|--------|----|--------|----|
| 曰——问 | 49 | 为——使 | 58 |
| 曰——号 | 50 | 为——与 | 58 |
| 曰——言 | 50 | 为——有 | 59 |
| · 曰——为 | 50 | 为——谓 | 59 |
| 曰——以为 | 51 | 为——曰 | 60 |
| 曰——有 | 51 | 为——乃 | 60 |
| 曰——者 | 52 | 为——被 | 61 |
| 聿——亦 | 53 | 为——然 | 61 |
| 聿——遂 | 53 | 为——由 | 61 |
| 聿——肇 | 54 | 为——因 | 62 |
| 聿——多 | 54 | 为——可 | 62 |
| 安排——安置 | 54 | 为——肯 | 62 |
| 焉——岂 | 54 | 为——助 | 63 |
| 焉——乎 | 55 | 为——成 | 63 |
| 焉——於何 | 55 | 为——作 | 63 |
| 焉——此 | 55 | 为——词尾 | 63 |
| 焉——是 | 56 | 为许——为此 | 64 |
| 焉——之 | 56 | 谓——问 | 64 |
| 焉——然 | 56 | 谓言——以为 | 64 |
| 焉——何 | 56 | 永——长 | 65 |
| 为——是 | 56 | 往往——常常 | 65 |
| 为——以 | 57 | 往者——曩者 | 65 |
| 为——如 | 57 | | |

卷 三

| | | | |
|--------|----|--------|----|
| 惟——皆 | 66 | 有——若、如 | 73 |
| 惟——在 | 66 | 有——犹 | 74 |
| 惟——伊 | 67 | 有——其 | 74 |
| 惟——之 | 67 | 有——是 | 74 |
| 惟——有 | 67 | 有——见 | 74 |
| 惟——则 | 67 | 有——多 | 75 |
| 惟——是、实 | 68 | 又——犹 | 76 |
| 唯——但 | 68 | 又——虽 | 76 |
| 唯——虽 | 69 | 或——若 | 77 |
| 惟——为 | 69 | 或——时 | 77 |
| 云——言 | 69 | 或——有 | 77 |
| 云——是 | 69 | 或——忽 | 77 |
| 云——有 | 69 | ——忽 | 78 |
| 云——或 | 70 | ——皆、总 | 79 |
| 云——如 | 70 | ——才 | 79 |
| 云——能 | 70 | ——举 | 79 |
| 云——已 | 71 | ——踅 | 79 |
| 云——以 | 71 | ——亦 | 80 |
| 云——虽 | 71 | ——一旦 | 80 |
| 有——在 | 72 | ——常 | 80 |
| 有——所 | 72 | ——满 | 80 |
| 有——可 | 72 | ——或 | 81 |
| 有——得 | 72 | ——甚 | 81 |

| | | | |
|----------|----|----|----------|
| ——乃 | 81 | 忆 | 90 |
| ——语助 | 81 | 亿 | 大抵、无虑 90 |
| ——同 | 82 | 伊 | 维 90 |
| 一向——片、一派 | | 伊 | 是 91 |
| | 82 | 伊 | 乃 91 |
| ——独 | 82 | 伊 | 在 92 |
| 一昨——忆昨 | 83 | 伊 | 奚 92 |
| ——其 | 83 | 伊 | 以 92 |
| 壹——殆 | 83 | 伊 | 而 92 |
| 亦——固 | 84 | 伊 | 发语词 92 |
| 亦——总、皆 | 85 | 伊 | 常 93 |
| 亦——犹、尚 | 86 | 伊 | 有 93 |
| 亦—— | 86 | 依稀 | ——想象 93 |
| 亦——已 | 87 | 依 | 似 93 |
| 亦——其 | 88 | 依 | 当 93 |
| 亦——复 | 88 | 依 | 随 94 |
| 亦——乃 | 89 | 依 | 向 94 |
| 亦——以 | 89 | 依 | 因 94 |
| 亦——且 | 89 | 奄 | 忽 94 |
| 意——似 | 89 | 淹 | 久 95 |
| 忆——怨 | 90 | 雅 | 常 95 |

卷 四

| | | | |
|------|----|------|----|
| 侯——乃 | 96 | 后——外 | 96 |
| 侯——兮 | 96 | 后——时 | 97 |

| | | | |
|----------------------|-----|-----------|-----|
| 暇——得 | 97 | 况乃——更是 | 107 |
| 害——或 | 97 | 况是——最是 | 107 |
| 胡宁——何能 | 97 | 况复——恍忽 | 107 |
| 胡然——何如此 | 98 | 向——临 | 107 |
| 瑕(遐)——胡 | 98 | 向——可 | 108 |
| 许——多、几许 | 98 | 向——随从 | 108 |
| 许——或 | 99 | 向——将 | 109 |
| 许——此(持许、如许、成许、许时、见许) | 99 | 向——还 | 109 |
| | | 向——往 | 109 |
| 许——语助 | 100 | 向——任 | 109 |
| 行——将 | 100 | 向——发 | 109 |
| 行——且 | 101 | 向——更 | 110 |
| 行——作 | 101 | 向——正、方 | 110 |
| 行当——行将 | 101 | 向——上 | 111 |
| 行——使 | 102 | 向——在 | 111 |
| 行——辄 | 102 | 向——当 | 111 |
| 行——正 | 103 | 向——问 | 112 |
| 行——历 | 104 | 向——与 | 112 |
| 遑——何 | 105 | 向——若 | 113 |
| 况——甚 | 105 | 向时——当时 | 113 |
| 况——比 | 105 | 向来——历来 | 113 |
| 况——更 | 105 | 向来——近来、适来 | 113 |
| 况——何 | 106 | 还——复、又 | 114 |
| 况乃——何乃 | 106 | 还——且 | 114 |
| | | 还——旋 | 115 |

| | | | |
|------------|-----|-----------|-----|
| 还——终 | 115 | 何当——何时 | 125 |
| 还——反 | 115 | 何当——合当 | 125 |
| 还——更 | 116 | 何当——何尝 | 126 |
| 还——即 | 117 | 何事——何用 | 126 |
| 还——亦 | 117 | 何事——何为 | 127 |
| 还——稍 | 117 | 何用——不须 | 127 |
| 还——来 | 118 | 何时——何以 | 127 |
| 好——可 | 118 | 何处——安处 | 127 |
| 好——多 | 118 | 何处——那得 | 128 |
| 忽——复 | 119 | 何处——谁家 | 128 |
| 忽——奄、遽 | 120 | 何言——如何 | 129 |
| 忽——飘 | 120 | 何言——不意、何意 | |
| 浩——多 | 120 | | 129 |
| 何——可 | 120 | 何言——谁知 | 130 |
| 何——甚 | 121 | 何知——不谓 | 130 |
| 何——非 | 122 | 何如——何有 | 130 |
| 何——不 | 122 | 何有——何如 | 130 |
| 何——无 | 122 | 矣——也 | 131 |
| 何——岂 | 123 | 矣——焉 | 131 |
| 何——叹声 | 123 | 也——则 | 131 |
| 何——啊 | 124 | 也——已 | 132 |
| 何许——何时 | 124 | 也——者 | 132 |
| 何物——什么、甚么、 | | 也——邪 | 133 |
| 拾没、啥东西 | | 也——亦 | 133 |
| | 124 | 乎——如 | 134 |

| | | | |
|--------|-----|---------|-----|
| 乎——然、兮 | 134 | 猗——兮 | 144 |
| 乎——所 | 135 | 吁——乌 | 144 |
| 乎——语助 | 135 | 吁——嗟叹 | 144 |
| 乎尔——叹辞 | 135 | 吁——喜貌 | 144 |
| 乎——否 | 136 | 学——如 | 145 |
| 呼——何 | 136 | 乞——给 | 146 |
| 户——酒量 | 136 | 爱——惜 | 147 |
| 恒——屡 | 137 | 幸——正 | 147 |
| 恒——常 | 137 | 幸——本 | 148 |
| 恒——徧 | 137 | 幸——喜 | 148 |
| 恒——尽 | 138 | 幸——且 | 149 |
| 恒——多 | 138 | 幸——应 | 149 |
| 兮——如 | 138 | 幸——会 | 149 |
| 兮——之 | 138 | 幸——愿 | 149 |
| 兮——然 | 139 | 合——应(当) | 150 |
| 兮——而 | 139 | 会——应当 | 150 |
| 兮——以 | 140 | 会——必 | 151 |
| 兮——则 | 140 | 会——将 | 151 |
| 兮——於 | 140 | 惠——发声 | 151 |
| 兮——语助 | 141 | 咸——皆 | 151 |
| 兮——乎、夫 | 141 | 休——莫 | 152 |
| 互——每 | 143 | 悬——遥远 | 152 |
| 互——相 | 143 | 猥——奄 | 152 |
| 猗——依 | 143 | 火——急速 | 153 |
| 猗——长 | 143 | 化——死 | 153 |

| | | | |
|-------|-----|------|-----|
| 解——能 | 153 | 恰——适 | 154 |
| 解——谐 | 154 | 和——与 | 154 |
| 奚——为何 | 154 | 虚——空 | 155 |

卷五

| | | | |
|---------|-----|--------|-----|
| 今——即 | 156 | 宜——在 | 161 |
| 今——是、此 | 156 | 宜——似 | 162 |
| 今——若 | 157 | 宜——如 | 162 |
| 今——乃 | 157 | 宜——且 | 162 |
| 羌——乃 | 157 | 义——自 | 163 |
| 羌——何 | 157 | 义——虽 | 163 |
| 羌——嗟 | 158 | 可——叵 | 163 |
| 蹇(蹇)——何 | 158 | 可——不可 | 164 |
| 蹇——嗟 | 158 | 可——更、复 | 164 |
| 语——与 | 159 | 可——敢 | 164 |
| 语——问 | 159 | 可——能 | 164 |
| 言——欲 | 159 | 可——相 | 165 |
| 言——而 | 159 | 可——多 | 165 |
| 言——似 | 159 | 可——易 | 166 |
| 言——信 | 160 | 可——可以 | 167 |
| 言——乃 | 160 | 可——岂 | 167 |
| 言——于 | 160 | 可——当 | 168 |
| 言——聊、且 | 160 | 可——足 | 168 |
| 言——载、式 | 161 | 可——何 | 168 |
| 言——然、焉 | 161 | 可更——何况 | 170 |